योग्य वर वधू की तलाश – आज के परिवेश में

वर्तमान में यह विषय बड़ा ही सामयिक हो गया है । कुछ वर्षों पहले माता पिता के लिए बेटी का विवाह एक समस्या होता था किन्तु बेटे को लेकर निश्चिंतता रहती थी परंतु आज समय बदल गया है । जितना कठिन बेटी के लिए अच्छा दामाद ढूंढ़ना है, उतना ही या कहे कि उससे भी कठिन बेटे के लिए उपयुक्त बहू लाना है । सारे प्रयासों के पश्चात यदि विवाह संपन्न हो भी जाए तो उसके जीवनपर्यंत निर्वहन का भी कोई ग्यारंटी नहीं है । इसे ऐसे भी कहें कि जितनी तेजी से विवाह होते है उससे भी कहीं अधिक शीघ्रता से विवाह विच्छेद हो रहे हैं । इस प्रकार आजकल विवाह सामाजिक संस्कार न होकर सामाजिक समस्या के रुप में अधिक सामने आ रहे हैं । विषय की तह में जाने पर कुछ अनचाहे सत्य सामने आते हैं । पहले विवाह एकतरफा निर्णय होता था जिसमें प्राय: लड़की की सहमति का कोई महत्व नहीं होता था । माता पिता को अपने मापदंडों के अनुसार जो उचित घर, वर पसंद आया, बेटी का ब्याह कर अपने कर्त्तव्य का इतिश्री समझ लेते थे । आगे बेटी की किस्मत । सब कुछ अच्छा रहा तो ठीक अन्यथा जीवन भर परिवार और परिस्थिति से समझौता ही उसकी एकमात्र नियति थी । अन्याय या अपमान का विरोध न तो संस्कारों में होते थे न ही इतना साहस जुटा पाती थी । बस स्त्री के त्याग और बलिदान से विवाह संबंध आजन्म चलते रहते थे ।

किन्तु आज स्थितियां एकदम उलट गई है । बेटियों की शिक्षा और हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की क्षमता ने केवल उनके व्यक्तित्व को ही नहीं निखारा, उनकी सोच और अभिव्यक्ति को भी नया आयाम दिया है । आज वह अपनी इच्छा अनिच्छा व्यक्त करने की, अपने भावी जीवन और जीवन साथी के बारे में निर्णय लेने की क्षमता और अधिकार रखती है और मुखर होकर निर्णय ले रही है । किसी भी तरह का समझौता उसे स्वीकार नहीं है । शिक्षा, करियर, जॉब आदि सभी क्षेत्रों में लड़कों से आगे निकल रही हैं । इसलिए विवाह और भावी जीवन का निर्णय भी अपनी शर्तों पर करना चाहती हैं ।

देखने-सुनने में यह सब बातें अच्छी लगती हैं । प्रगतिशील विचार धारा के अनुकूल हैं । कोई भी आधुनिक सोच वाला व्यक्ति इससे असहमत नहीं हो सकता परंतु वास्तव में समस्या यहीं है । सब कुछ अच्छा है, लेकिन सिर्फ सतही तौर पर । हम स्वयं को बहुत प्रगतिशील समझते हैं, लेकिन सिर्फ ऊपरी तौर पर ही । जैसे ही बात स्वयं पर आती है हमारा पारंपरिक रुप सामने आ जाता है । अपनी बेटी के विवाह के समय हम बेटियों के आधुनिक रुप की वकालत करते हैं किन्तु बेटे के विवाह के समय बहू का यह रुप हम स्वीकार नहीं कर पाते । बेटी के विवाह के लिए हमें अच्छा पढ़ा लिखा, ऊंचे पैकेज वाला, बड़े शहर में किसी बड़ी कंपनी में ऊंचे ओहदे पर काम करने वाला, एकल परिवार या अकेला लड़का, आदि आदि चाहिए । घर में संपन्नता हो, हर काम के लिए नौकर चाकर हो, बेटी को कुछ काम न करना पड़े, आधुनिक लाइफ स्टाइल हो, सभी तरह की आजादी हो तो ही वह सुखी मानी जाती है । परंतु बेटे के लिए बहू ढूंढ़ते समय यह मानदंड बदल जाते हैं । बहू पढ़ी लिखी और जॉब करती हो, पर घर की मान मर्यादा के अनुसार ही रहे । जॉब के साथ घर की सारी जिम्मेदारी भी संभाले, ज्यादा आधुनिक विचारों की न हो, परिवार को साथ लेकर चले आदि आदि अनेक अपेक्षाएँ स्वत: हो जाती हैं । बेटे और भावी बहू दोनों के जॉब में होने पर जॉब का समझौता बहू को ही करना होगा । ऐसे अनेकानेक मुद्दें है जो विवाह के पहले और बाद में विवादों की वजह बनते हैं । लड़कियों की उच्च शिक्षा और अच्छा करियर उनमें भी वही महत्वाकांक्षाएँ जगा रहा है जो कभी लड़कों का एकाधिकार था । हममें से अधिकांश लोग बेटी और बेटे की समान परवरिश की वकालत करते हैं किंतु बेटियों को आगे बढ़ाते हुए हमने स्वयं को इसके लिए तैयार नहीं किया । इसी तरह "बेटी और बहू में कोई अंतर नहीं" है, यह कहावत गढ़ने वाले भी इस पर पूर्णत: अमल नहीं कर सके ।

इस सारी समस्या का समाधान हम पर निर्भर है । इसके लिए नि:संदेह हमें अपनी सोच बदलनी होगी जो कि सरल कार्य नहीं है परंतु समय के साथ बदलाव आ रहा है । आज बहूओं को लेकर ससुराल का वातावरण पहले की तुलना में काफी सकारात्मक और सहयोगपूर्ण है । स्थिति काफी हद तक संतुलन में है बल्कि कभी कभी बेटियों का ही पलड़ा भारी नजर आता है । अत: इस ओर भी कुछ बदलाव की आवश्यकता है । विवाह के समय जितना हो सके संबंधों में पारदर्शिता और स्पष्टता रहे तो भविष्य में समस्याएँ कम होती है । अनावश्यक दुराव छिपाव से शंकायें जन्म लेती हैं । विवाह संबंध जहां तक हो सभी स्तरों पर लगभग बराबरी का हो, चाहे वह वर वधु की शिक्षा, करियर, जॉब, आर्थिक स्तर या सामाजिक प्रतिष्ठा का ही क्यों न हो ।

समय और परिस्थिति की मांग के अनुसार सामाजिक बंधनों को भी थोड़ा ढीला करके हमें अपने विकल्पों को बढ़ाना चाहिए । छोटे समाज में विकल्प भी सीमित हो जाते हैं । माता पिता और बेटियों को भी अपने स्तर और योग्यता के अनुकूल घर, वर देखना चाहिए न कि अपनी महत्वाकांक्षा के अनुसार । वर के चुनाव के समय केवल ऊंचा पैकेज, अच्छी बहुराष्ट्रीय कंपनी में जॉब या बड़े शहर की लाइफ स्टाइल को ही महत्व न दें । छोटे शहर या कस्बे में रहने वाले, स्वयं का पारंपरिक व्यापार संभालने वाले परिवारों का जीवन स्तर भी कई बार बहुत अच्छा होता हैं । उनके आर्थिक संघर्ष भी बड़े शहरों की तुलना में कम होते हैं । बेटे और बेटियों को शिक्षित के साथ ही संस्कारी भी बनायें । विवाह के पश्चात दोनों को एक दूसरे का ही नहीं दोनों परिवारों का भी सम्मान करना चाहिए ।

दोनो ओर के माता पिता भी अपनी भूमिका सकारात्मक रखें, विवाह के पश्चात बच्चों को आपसी समझ बढ़ाने के लिए समय और मौका दें तो परिवार में सुख शांति बनी रहती है । विवाह सफल होगा या नहीं इस बात की ग्यारंटी तो कोई भी नहीं दे सकता किंतु महत्वपूर्ण मुद्दों पर स्पष्ट चर्चा हो सके तो अच्छा होता है । विवाह केवल वर वधु का मिलन ही नहीं बल्कि दो परिवारों, दो विभिन्न संस्कृति और विचारधाराओं का भी मिलन होता है । परस्पर प्रेम और सौहार्द्र की भावना से जुड़े संबंधों के स्थायी होने की भी संभावना रहती है । एक दूसरे की भावनाओं को सहानुभूति और आदर भाव से समझनें का प्रयास करें और पूर्वाग्रहों से दूर रहें तो विवाह समस्या न रहकर सामाजिक संस्कार के रूप में हमेशा के लिए सुखद अनुभव ही रहेगा । - अनुपमा जैन

संस्कारों से परिपूर्ण एक विद्यालय- प्रतिभास्थली

एक लड़का पढ़ता है तो अपना नाम रोशन करता है, अपने परिवार को गौरवांवित करता है और अधिक हुआ तो कुल को ख्याति दिलाता है लेकिन एक लड़की पढ़ती है तो अपना और अपने परिवार का नाम तो रोशन करती ही है बल्कि वह दो दो कुलों की ख्याति बढ़ाती है और यदि लड़की किसी संस्कारित स्कूल में पढ़ी हो तो कहना ही क्या वह ऐसा आदर्श प्रस्तुत करती हैं कि लोग तारीफ करते नहीं थकते ।

आचार्य विद्यासागरजी महाराज की दूरदर्शिता को हम किन शब्दों में बखान करे, कहने के लिए शब्द ही नहीं है उन्होंने युवतियों को संस्कारित शिक्षा प्रदान करने के लिये, शादी के पूर्व तक उनके शील को सुरक्षित बनाये रखने एवं मर्यादाओं के साथ जीवन के निर्वाह की सोच रखते हुए प्रतिभास्थली जैसी बालिका आवास पाठशाला की नींव रखी जिसे लोगों ने हाथो हाथ बहुत आगे बढ़ाते हुए पूरा ही नहीं किया बल्कि अब तक पांच या छ: प्रतिभास्थली संचालित भी होने लगी है ।

जबलपुर, रामटेक, डोंगरगढ़, पपौरा और इन्दौर में संचालित होने वाली प्रतिभास्थली में आचार्य महाराज से ब्रह्मचर्य की दीक्षा लेने वाली ब्रह्मचारिणी बहिनें अध्यापन का कार्य कराती है और आप को यह बताना भी उचित है कि आचार्य महाराज ने व्रत देने के पूर्व उन्हें योग्यता के हिसाब से उच्च शिक्षा प्राप्त करने का आशीर्वाद देते है जिससे वे स्वयं अध्यापन के कार्य में पारंगत हो सके, अब जब ब्रह्मचारिणी के परिवेश में रहने वाली अध्यापिका हमारी बच्चियों को पढ़ायेगी तो यकीन मानिये बच्चियां मात्र पढ़ने में ही अव्वल नहीं होगी बल्कि सदाचरणों से परिपूर्ण सुसंस्कारवान दो दो कुलों को रोशन करने वाली भी बनेगी ।

पुराने समय में जिस प्रकार गुरुकूल का माहौल हुआ करता था ठीक उसी तरह आज सभी प्रतिभास्थलियों में भी आवास और भोजन की व्यवस्थाओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है । शुद्ध और सात्विक भोजन के साथ साथ पौष्टिकता का भी बड़ा ध्यान दिया जाता है। सुबह का नाश्ता हो अथवा सांध्यकाल में दूध सभी को अनिवार्य रूप से दिया जाता है ताकि बौद्धिक विकास की गतिविधियों में लिप्त रहते हुए बच्चियां शारीरिक रुप से भी स्वस्थ बनी रहे ।

पूज्य गुरुदेव की असीम कृपा समय समय पर बच्चियों पर होती रहती है और वे अपने विशेष आशीर्वाद से उन्हें अभिसिंचित करते रहते है तभी तो समस्त प्रतिभास्थलियों की बच्चियां भी विशेष धार्मिक नाटक या भक्ति नृत्य तैयार कर उनकी प्रस्तुतियों से समानजनों का मन मोहती है और प्रतिभास्थली के नाम का गौरव बढ़ाती है ।

वर्तमान में सभी प्रतिभास्थलियों में प्रवेश की प्रक्रियाएँ प्रारंभ है यदि आप भी अपनी बच्चियों को संस्कारित बनाना चाहते हैं तो निकटतम प्रतिभास्थली में संपर्क कर उनके मानसिक और बौद्धिक विकास की परीक्षा दिलायें । यदि बच्ची द्वारा दी गई परीक्षा में सफल होती है तो उसे प्रतिभास्थली में पढ़ाई करने का सौभाग्य प्राप्त होगा इसलिये देर ना करें, कहीं सोचते सोचते समय ना निकल जाये... ✲ **डोंगरगढ़** – मो. 8349920695, 9300622051 ✲ **पपौराजी** – मो. 6263121898 ✲ **जबलपुर** – मो. 9685322388 ✲ **रामटेक** – मो. 9405707781, 9359156546 ✲ **इन्दौर** – मो. 9754626800 ।

संकलन – नागेन्द्र जैन, इन्दौर

नि:शक्त रोगियों की सेवा करना ईश्वर की सबसे बड़ी पूजा

पुष्पेन्द्र जैन 'मिन्टू', देवेन्द्र नगर । दिगम्बर जैन धर्मशाला में दिगम्बराचार्य श्री विरागसागरजी महाराज के शुभाशीर्वाद से एवं जनसंत मुनि श्री विरंजनसागरजी व मुनि श्री विश्वद्वगसागरजी गुरुदेव की प्रेरणा से 25 मार्च को प्रतिष्ठाचार्य पं. संकेत जैन (विवेक) द्वारा आगमोक्त विधिविधान पूर्वक चंद्रप्रभ दि. जैन नि:शुल्क औषधालय का नगर निवासियों द्वारा शुभारंभ किया गया ।

नगर के इतिहास में यह अनुकरणीय पहल है । इस औषधालय के संचालन व समुचित क्रियान्वयन हेतु समिति का गठन एवं समुचित फंड का संचय भी किया गया, औषधालय को पूर्णतया अहिंसक रुप से संचालित किया जायेगा । इसमें जो औषधियाँ रोगियों को दी जायेगी वह अतिप्राचीन आयुर्वेदिक जैन ग्रंथ कल्याणकारकमष्की संहिता के माध्यम से शुद्ध व मर्यादित होंगी । नगर के यशस्वी चिकित्सक डॉ. प्रमोद जैन, डॉ. आर.बी. सेन, डॉ. सुरेन्द्र पिम्पले, डॉ. अभिषेक जैन, डॉ. संतोष जैन, डॉ. जयहिंद जैन,डॉ. देवेन्द्र कुशवाहा, डॉ. सुरेन्द्र जैन ने नि:शुल्क रुप से सेवा देने हेतु स्वीकृति भी दी है ।

जनसंत विरंजनसागरजी ने समस्त समाज को मंगल आशीर्वाद व सत्प्रेरणा देते हुये कहा निशक्त तथा रोगियों की सेवा करना सबसे बड़ी प्रभु पूजा है प्रत्येक मनुष्य में ईश्वर है बस आपके श्रद्धा व समर्पण के नेत्र होने चाहिये । मुनिश्री ने कहा कि उपकारी के उपकार को भूलना नहीं चाहिए, और उपकार करने वाले को उपकार करके सम्मान की लालसा नहीं रखनी चाहिए । दूसरे का भला करने से स्वयं का भला स्वत: हो जाता है, जैन दर्शन में अहिंसात्मक तरीके से शरीर को स्वस्थ रखने के उपाय कहे गये है जो आयुर्वेद से संभव हैं, यह औषधालय जैन मंदिर के समीप है ताकि भगवान की कृपा, साधुओं का आशीर्वाद और चिकित्सकों की औषधि जब तीनों असर दिखायेंगे तो दुनिया में कोई भी बीमारी ऐसी नहीं जो ठीक न हो सके । चिकित्सकों ने परमार्थ के लिये उपकार के लिये सेवा और समय दिये वह सब साधुवाद व सम्मान पात्र हैं, डॉक्टर तन की रक्षा करेंगे, साधुसंत मन की विचारों की सुरक्षा करेंगे । संतों की साधना के बल पर हर नागरिक सुखद अहसास पा रहा है । आज औषधालय है भविष्य में पूर्ण अस्पताल हो जायेगा । बच्चा विद्यालय जाता है तो अध्यापक के संरक्षण में होता है बीमार हो तो चिकित्सकों के संरक्षण में तथा जीवन संवर्धन हेतु संतो साधु ओं गुरुओं के संरक्षण में आना आवश्यक होता है । श्रावक मन के अनुसार चलता है संत मन को अपने अनुसार चलाता है । आयोजन में कुंवर अजय सिंह, अंगूरीबाई कैलाश जैन, प्रेमचंद जैन, रविन्द्र जैन, गुलजारीलाल जैन के साथ समाज के कई संगठनों ने तन, मन, धन से सहयोग देने की स्वीकृति दी है । इस अवसर पर विमर्श जागृति मंच ने घोषणा की, कि देश की रक्षा में तैनात सैनिक परिवारों को चिकित्सा सेवा उनके घर तक पहुंचाने का कार्य संगठन का हरेक सदस्य करेगा ।